कुम्भ
2–3 अक्टुबर 2008, तरुण आश्रम, भीकमपुरा

महात्मा गांधी जयन्ती और तरुण भारत संघ के स्थापना दिवस के अवसर पर अक्टुबर 2, 2008 को तरुण आश्रम, भीकमपुरा में तरुण भारत संघ और जलबिरादरी ने'कुम्भ' का आयोजन किया गया। इसमें भारत वर्ष और विदेश से आये पर्यावरणविद, वैज्ञानिक विचारवंत, पत्रकार, सन्त–महात्मा गण, जल संरक्षक एवं गांव के लोगों ने भाग ले लिया।

इस कुम्भ में मूलरुप से प्रकृति, पानी, सरकार और समाज के रिश्ते तथा इससे जुड़े विषयों पर विचार मंथन किया गया। विचार मंथन के बाद जल बिरादरी के सभी सदस्य प्रकृति, जल और समाज के हित में इस तरह से निर्णय लिए गये –

1. निरंतर मानवीय सहकार्य और जल एवम् पर्यावरण संरक्षण का कुम्भ प्रतिक है। इसलिए प्रकृति से जुड़े सभी विषय समाज के है। इसलिए समाज को तैयार करने के लिए, दिशा देने के लिए व्यासपीठ कुम्भ के माध्यम से तैयार करना
2. भारत के सभी राज्यों में कुम्भ के प्रति आदर और सम्मान की भावना है। यह भावना और प्रेरणा जुजारु रुप में नदियों को प्रदूषण मुक्त और बारमाही बहने योग्य परिवर्तित करना। इस काम में विभिन्न विषयों में काम करने वाले सज्जनों से आम आदमी तक एक प्लाटफार्म बनकर जलबिरादरी पूरे भारत वर्ष में उभरकर आये।
3. सरल रास्ता समाज अपनाता है। सहज मन से निकली बात समाज अपनाता है। इस दिशा में लिए गये निर्णय समाज के अपने होते है। इसलिए जलबिरादरी देश की प्रमुख नदियों के गतिविधियों के जानकारी समाज के सामने रखने का प्रयास करे।

निम्नलिखित वक्ताओं ने अपने विचार इस प्रकार रखे–

1. डा. भारतेन्दु प्रकाश, (प्राध्यपक बुन्देल खण्ड़ संसाधन अध्ययन केन्द्र) ने कहा कि गांधीजी और कुम्भ सामुहिक कृति का संदेश के प्रतीक है। 'धर्मो रक्षितोः रक्षितः' यह वचन जितना स्वाभाविक है, उतना ही 'हम नदी की रक्षा के करे तो वो हमारी रक्षा करेगी।' उतना ही यह वचन स्वाभाविक हैं। हजारो सालों से कुम्भ का स्नान जीवन का सर्वश्रेष्ठ पुण्यदायी अनुभव के रुप में जाना जाता है। अब हमें इन्हीं नदियों को प्रदूषण और अत्याचार मुक्त करने का संकल्प करना है। कुम्भ की विचार धारा इन दिशाओं में खरी उतरेगी।
2. डा. परितोष त्यागी (पूर्व अध्यक्ष केन्दीय जल प्रदूषण बोर्ड) ने कहा कि गांधी जी ने अहिंसा को शस्त्र के रुप में प्रयोग किया और देश को जोड़ दिया। अभि यही समय आया है कि सारे देश की जनमानस को प्रदूषण और नदियों का अकल्याण करने वालों के विरुद्ध तयार करें गांव और शहर के लोग एक दूसरे को सच्ची लगन से सोचे। शहरों के लोगों द्वारा पानी का अपव्यय नही करना चाहिए। उनमें वो समझ हमें बढ़ानी है।
3. राजेश गुप्ता (पुलीस अधीक्षक) ने कहा कि भारतीय सभ्यता और संस्कार पूरी दुनिया में जानी जाती है उसका गौरव होता है। 'दान हमारी परम्परा है,भीक नही' अब पानी के लिए लड़ाई और झगड़े होने है ऐसा बोलते हैं तो दुख होता है। पानी लड़ाई का करण बने, किसान पानी के लिए भीक मांगे ये शर्मनाक बात है। हमारी जिम्मेदारी यह है कि यह स्थिति न आये यह हमारी जिम्मेदारी है।
4. प्रा. विक्रम सोनी ()यमुना शुद्ध और सदानीरा बनी रहे इस प्रयास में किये गये प्रयत्नों के बारे मे उन्होंने कहा कि सरकार की समझ बदलने की शक्ति और उनके विचारों को बदलने की ताकत समाज में है, यह यमुना सत्याग्रह आन्दोलन से स्पष्ट हुआ है। यमुना खादर में बड़ी बिल्डिंग

बनाने का सरकार का विचार समाज की सामुहिक शक्ति ने नकार दिया। यमुना नदी का बहाव सुरक्षित रह गया। यह सामुहिक शक्ति का विजय है।

5. सन्त श्री बलबीर सिंह सींचेवाल ने कहा कि गांधी जी सेवा के प्रतीक है तो कुम्भ मनुष्य जीवन के स्वाभाविक आत्मसम्मान और प्रकृति के परस्पर संबंध का प्रतीक है। अमीर होने की लालसा ने मनुष्य ने प्रकृति के संसाधन नष्ट करने का काम चालू किया है, उसे रोकना पानी क प्रदूषण और नदियों के बहाव को अवरोध करने वालों के विरोधी हमें लडना है। यह लड़ाई हमें समाज हित में करनी है। आप जब जब हमें बुलायेंगे हम दौड़ते हुए आयेंगे और हमारा पूरा सहयोग देंगे। कहनी और कथनी में फरक स्पश्ट करते हुए उन्होंने कहा कि माता गंगा जी की स्थिति प्रदूषण से बिगड़ती जा रही हैं। मन्दिर में जो आरती करने के लिए साफ–सफाई होती है, वो कचरा, जिनकी आरती होती है वो गंगा माता में फेका जाता है, ये कैसा संभव हो सकता है? यह दृश्य नही दिखे इस लिए हमें एकजुट होकर करसेवा करनी है। कालिया सर्प के विष का भगवान श्री कृष्ण ने नाश किया लेकिन केमिकल खादों से निर्माण हुए विष जमीन के अन्दर पनप रहे है, उनका नाश कब होगा? यह समाज का जिम्मा है।

6. श्री रवि चोपड़ा (निदेशक, लोकविज्ञान संस्थान) ने कहा कि जीवन के अनुभव से निकला हुआ विचार आदमी को प्रेरणा देता हैं यही प्रेरणाएं ऋषि – मुनियों ने हजारो साल पहले दी थी जो आज भी हमारे दैनंदिन जीवन को प्रभावित करती हैं। कश्यप ऋषि जल देवता के अग्रज ऋषि माने जाते हैं। जल संरक्षण और जल उपयोग के बारे में उन्होंने सरल और सीधे पॉच सिद्धान्त बताये थे, जो आज भी सर्वरुप से यथार्थ है। –क. किसी भी नदी का उद्गम स्थल पूजनीय है। वहां मन्दिर बनाओ और उसका रक्षण करो।, ग. नदियों के गति में न्यूनतम अवरोध हो।, घ. जंगल और पानी का रिश्ता गहरा हैं दोनो एक दूसरे पर निर्भर है। एक दूसरों से इन्हे अलग नही करना है।, प. जितना आवश्यक है केवल उतना ही पानी नदी से लिया जाए।, ब. हर व्यक्ति अपनी योग्यता नुसार पानी का पूर्णरुप से संरक्षण करें। यह हजारो वर्षों से बतायी गई बाते फिर एक बार लोगों में पहुंचाने के लिए हम पूर्णरुप से तैयार रहे। (ज्योतिर्ष्यपीठ के शंकराचार्य जी का संदेश)

7. स्वामी निगमानन्द जी ने कहा कि गंगा प्रदूषण मुक्ति के लिए समाज एक रुप और एक विचार से खड़ा हो गया है । अब जरुरी है इस चेतना को चिंगारी में बदलने की। तीन पीढियों के प्रयास तपस्या के बाद गंगा ने पृथ्वी पर कदम रखा। अब उसकी संरक्षण में हमारी जान चली जाए तो भी बेहतर ऐसा विचार हमने रखा और अनशन किया । किसी काम के प्रारम्भ के लिए एक बिन्दु की आवश्यकता होती है। यह बिन्दु अब पूरे देशभर चेतना के रुप में धर्म और जल और नदी संरक्षण के विचारों की नींव रखने के लिए काम आये। पर्यावरण रक्षण और सामाजिक विचार धारा को दिशा देने का काम धर्म कर सकता हैं। गंगा नदी के संरक्षित क्षेत्र में हुए अतिक्रमण के विरोध में पू. स्वामी जी ने 73 दिन का अनशन किया था । इस अनशन का प्रभाव उनके शरीर पर जरुर हुआ लेकिन उनकी प्रखर वाणी और आत्मतेज स्पष्ट रुप से यहां बैठे कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दे रहा था।

8. पाली के विधायक सुखबीर सिंह ने कहा कि जलबिरादरी द्वारा मेरे सोच में परिवर्तन आया। विकास का मूल आधार पानी का योग्य तरीके से किया हुआ संरक्षण इन मुद्दों पर हमने हमेशा विधानसभा में आवाज उठाई, बहस की। नदियों का अवरोध न हो इसलिए प्रयत्न किया । हम इसे गर्व महसूस करते है। जंगल और पानी का रिश्ता जैसा गहरा है, वैसा मनुष्य और पानी का है। राजस्थान की एक कहावत स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि एक लोक गीत में पशुपालक महिला ने कहा कि हमे चाहे तो बाढ़ से मारना, सूखे से नही। प्रकृति और पर्यावरण रक्षण के लिए हम आजीवन कटीबद्ध है। श्री खुशबीर सिंह जी ने जल संरक्षण के लिए किये प्रयासों को तरुण भारत संघ और जलबिरादरी द्वारा सराहा गया। उन्हें 'जल विधायक' की उपाधी देकर सम्मानित किया।

9. पूर्व केन्द्रीय मंत्री संजय पासवान ने कहा कि नदियों का समाज से शाश्वत संबंध है। बिहार में 32 नदियॉ सदानीरा तो 64 मृत नीरा हैं। इन नदियों के पुनर्जीवित करने का लक्ष्य हमे रखना हैं। हमें इस कार्य में जलबिरादरी सहयोग दे। पानी के विषय पर संसदीय मंच बनाने के लिए हम प्रयास करेंगें निष्पक्ष रुप से इस कार्य में सांसदों को योगदान करने के लिए सक्रिय करेंगे। जल संरक्षण के लिए हो रहे आपके प्रयास कृति के रूप में पूर्णरूप से सिद्ध हो इसलिए सहकार्य करेंगे । राजेन्द्र सिंह जी की ओर देखते हुए उन्होंने कहा कि पानी के काम में आप हमारे गुरु है, जो आदेश आप हमें दे, वो हम निभाएंगे। माता दुर्गा ने शुंभ और निशुंभ का सर्वनाश किया। अब नदियों के, कुम्भ के किनारे खड़े प्रदूषण और अतिक्रमण ये शुंभ–निशुंभ को कैसे खतम करें? इसके लिए हमें माता दुर्गा से शक्ति चाहिए।

10. जी. के. व्यास (पूर्व सलाहकार मध्य प्रदेश सरकार) ने कहा कि सरकार और समाज का केसा रिश्ता है? उसपर विकास कार्य निर्भर होते हैं। सरकार समाज के पिछे खड़े होकर सामर्थ्य देती है और आगे खड़े होकर रास्ता दिखाती है तो यह रिश्ता अच्छा और कायम हो सकता है । हमे सरकार की खामियॉ न देखते हुए सरकार की सोच को विकास की ओर बढ़ाने की कृति करना चाहिए। इस कार्य में विधायको का सहकार्य लेना चाहिए। सत्य के लिए की बात अगर देरी से भी समझ में आये तो कोई नुकसान नही। संयम से काम करके सत्य को हमेशा रास्ता दिखाने का काम जलबिरादरी द्वारा हो रहा है और यह काम समाज स्वीकार रहा है। इसका उदाहरण है राजस्थान में हुई सात नदियों का पुनर्जीवन। इस काम ने सच्चाई की राह पर चलने वाले लोगों को परीपूर्ण बना दिया हैं।

11. प्रो. एम. एस. राठौड़ ने कहा कि हमारी शिक्षा का व्यापारीकरण बड़ी तेजी से हो रहा है। जिसका समाज के लिए कोई फायदा नही है। समाज की शक्ति अपूर्व है। सन्तों के हाथों से हुए कार्य समाज की शक्ति बढ़ाते हैं। श्री संन्त बलबीर सिंह सींचेवाला के नेतृत्व में हुई काली बै नदी का शुद्धिकरण किया गया। ये सन्त और समाज के एकत्रित प्रयास का साझा उदाहरण है। जल संरक्षण के कार्य में अभी युवक और बालको की शक्ति जुटानी है। जलबिरादरी की इस विषय में प्रमुख भूमिका रहेगी। जो अच्छे कार्य सहज भाव से दिखते हैं उसका समाज पर असर होता है। समाज उसका आदर करता है। गंगा और यमुना नदियों के शुद्धिकरण के लिए समाज द्वारा जो प्रयास हो रहा है, उसे नजदीकी से देखा जा रहा है अब हमे संघठित होकर देश के हर राज्य में एक नदी या नाला प्रदूषण मुक्त करना है । इस कार्य से गंगा और यमुना की लड़ाइ में समाज की ताकत बढ़ेगी। सरकार दबाव पर चलता है। ये ध्यान में रखकर आगे की रणनीति तय करनी है।

12. यमुना सत्याग्रह में जुटें मा. बलजीत सिंह और श्री दिवान सिंह द्वारा इस सत्याग्रह में हुई कार्यवाही की प्रस्तुति की गई। मा. बलजीत सिंह ने कहा कि किसान को हीन भावना से देखा जाता है। ये दृष्टि बदलनी चाहिए। वास्तविकता तो यह है कि नदी की सुरक्षा किसान करता है और नदी से हुई बाढ़ रूपी पीड़ा किसान ही झेलता है। लेकिन उसे निर्णय का अधिकार नही मिलता। अब हमे किसान की शक्ति बढ़ाने के लिए नियोजन करना है। उनके विचारो में अंतर नहीं आये और पैसों के लिए किसान को बिकना न पड़े। दिवान सिंह जी ने यमुना सत्याग्रह में संशोधन के कारण हुई जीत के बारे में कहा कि यमुना के खादर में जो पानी जमीन के अन्दर जाता है उस पानी से यमुना का बहाव नियंत्रित होता है।अगर वहां कंकरीट डाली गई तो शहरी इलाको में बाढ़ का खतरा हो सकता। जमीन के अन्दर जाने वाले पानी का रास्ता रोकना उचित नही हैं। ये सरकार के ध्यान में आया और भविष्य में होने वाली दुर्घटना टल गई। किसानों का पानी छीनकर शहरों के लिए देना उचित है क्या? ऐसा सवाल उन्होंने किया।

13. के आर. गुप्ता (वरिष्ठ भूवैज्ञानिक, जिआलोजिकल सोसायटी आफ इण्डिया) हमारे पूर्वज और राजा –महाराजा पानी के स्त्रातों के प्रति बहुत सजग थे उन्हें पता था कि अगर पानी के स्त्रोत दुर्लक्षित किये गये तो दुश्मन से ज्यादा समाज का दबाव और खतरा सत्ता की पलट फेर कर सकता है। अगर यमुना नही रही तो दिल्ली उजड़ जायेगी । भारतीय भूवैज्ञानिकों के पितामह

डा. राधाकृष्णन जी ने हमेशा आम आदमी की पानी जरूरतों का खयाल रखकर सरकार को मार्गदर्शन किया। पर्यावरण रक्षण और समाज से जुड़ी सरकार की जलनीति इसका गहरा संबंध वैज्ञानिकों ने हमेशा समाज हित के लिए जागरूक रखना चाहिए।

14. प्रा. एम. पी. एस चन्दावत ने कहा कि विज्ञान और समाज का जनमानस एक दूसरे के साथ चले तो जीवन सुखी होता है। यह स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि अपने देश में पानी का संग्रहण करने के लिए सदियों से मिट्टी के घड़ो का उपयोग किया गया। विज्ञान कहता है कि इससे पानी में स्थित 50 प्रतिशत फ्लोराईड कम होता है। ये सादा सरल प्रयोग से देश के सेहत हमेशा अच्छी रही अब बोतल बन्द पानी का हर घर में प्रयोग हो रहा है। कार्पोरेट कम्पनियों ने पानी के बाजार से सेहत पर असर कर दिया है। जल–जमीन–जंगल –जानवर और जमीर ये सभी विज्ञान से जुड़े है जो कभी अलग नही हो सकते। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पैदा हुआ खतरा कैसे टले इसके उपर कुम्भ के माध्यम से चर्चा होनी चाहिएं इस पीढ़ी ने नदी संरक्षण की लड़ाई शुरू की है, जो हमे जीतनी है।

15. अनिल नायडु(ब्ल्यू रिवर फाउडेशन, कनाडा) श्री अनिल नायडु का जन्म दरबन, दक्षिण अफ्रिका में हुआ। जो अभी वैश्विक स्तर पर नदियों के संरक्षण के लिए जुटें है। गांधी जी के जन्म दिवस के अवसर पर भारतीय मूल के अनिल नायडु के कर कमलों द्वारा गांधी जी – एक विचार विमर्श इस किताब का विमोचन हुआ, गांधी जी के विचारों का संकलन ज्येष्ठ पत्रकार ज्ञानेन्द्र रावत जी ने किया है। श्री नायडु ने कहा कि गांधी जी के विचारों से प्रभावित इस तरुण भारत संघ द्वारा किया हुआ काम पूरी दुनिया को स्वावलम्बन का सूत्र पूर्ण रूप से दर्शाता है। धरती ओर पानी का गहरा संबंध यहां जिस तरह से प्रकट हुआ है वो मैने कही नही देखा। पानी 'कमोडिटी ' नही है तो पूर्ण रूप से जीवन हैं यह चित्र मैने यहां देखा। पश्चिमी समाज कृति और विचारों से तकनीक की माध्यम से विकास पा रहा है लेकिन क्या वाकई वह शाश्वत विकास है? पश्चिम में कोई भी आदमी अपने भविष्य के रोजगार संरक्षण के प्रति आश्वस्थ नही हैं। उसके मन में कल क्या होगा? उसका डर है। इसके ठीक विपरित आपके क्षेत्र में पानी और समुचय विकास के कारण भविष्य को लेकर चिंतित नही है। यही गांधी जी के विचारों का जनमानस पर रहा प्रभाव दर्शाता है। कनाडा में भी नदियों की कोई अच्छी स्थिति नही है। नदी प्रदूषण वही भी है। जल संरक्षण के मुद्दों पर हम आपसे बहुत कुछ सीख सकते हैं।

16. श्री मनोज मिश्र (यमुना सत्याग्रह) ने कहा कि गांधी जी करोड़ो लोगों के मन में छिपे है, उनको समाज के सामने निश्चित उद्देश्य के साथ लाने की कृति तरुण भारत संघ द्वारा हुई है। पर्यावरण का नाश न हो इस सोच ने देश भर जो व्यापक स्वरुप लिया है, उसका श्रेय तरुण भारत संघ को देना चाहिए। कथनी और करनी एक चाहिए यह गांधी जी का संदेश पर्यावरण रक्षण के बारे में हर एक के दिल में उतरना चाहिए। साधु–सन्त और समाज की एकत्रित शक्ति नदियों और वनों के संरक्षण में बड़ा योगदान देने वाली है।

17. श्री वीरेश्वर उपाध्याय (अखिल विश्व गायत्री परिवार, हरिद्वार, उत्तराखण्ड) प्रकृति के प्रति संवेदनाहीनता यह समाज का लक्षण उसे प्रतिदिन नरक की ओर ले जा रहा है। आदमीओं मे बसे देवत्व के कमी होने के कारण हमारे देश में पर्यावरण विनाश हो रहा है। अब सभी अच्छे विचार रखने वाले लेकिन कुछ कर पाने की हिम्मत न रखने वाले लोगों को पर्यावरण के हित में खड़ा होना चाहिए। उसमें आत्मविश्वास देने का कार्य जलबिरादरी द्वारा हो रहा है । हम इस कुम्भ से ऐसी शक्ति लेकर जाए जो अपने–अपने क्षेत्र में कुम्भ का आयोजन करे। आज हमारे अच्छे विचारों का हुआ संगम आगे सागर बन जायेगा। जिस राह पर हम बढ़ रहे हैं, वो पूरे विश्व को मार्गदर्शक होने वाली है। गायत्री परिवार संपूर्ण शक्ति से इस कार्य को सहकार्य करेगा।

18. डा. काबरा (चिकित्सक) ने कहा कि जल प्रदूषण की वजह से इस और आनेवाली पीढ़ी को दुष्परिणामों का सामना करना पड़ रहा है। डा. काबरा जी ने जो तथ्य बताये उससे ये

दुष्परिणाम कितने भयंकर है इसका अहसास हुआ। – राजस्थान में हर 1000 जन्मे बच्चों के पिछे 50 बच्चों का जनम मृत स्थिति में होता है। – जल और जमीन प्रदूषण रासायनिक खाद की ज्यादा मात्रा के कारण भी हो रहा है। स्पोटेनिअस एर्बोशन दर राजस्थान में सबसे ज्यादा है। पंजाब जैसा कृषि प्रधान राज्य को भी जल और जमीन प्रदूषण का सामना करना पड रहा है। रासायनिक खाद की अतिरिक्त मात्रा ने इस राज्य की स्थिति भीषण बनाई है।

द्वितीय सत्र

1. श्री रणसिंह परमार (एकता परिषद) ने कहा कि प्रकृति संरक्षण का जिम्मा हमारा है ऐसा कहते तो सब है, लेकिन उस दिशा में कार्य नही होता। असंतुलित कार्य को संतुलित करने की दिशा में उमंग लेकर हम कुम्भ में पहुंचे हैं। अब हमें नदियॉ बचाने के साथ आनेवाले समय में इस विचार को पूरे भारत में फैलाना है।
2. डा. विजय वर्मा (चिकित्सक, हरिद्वार) ने अपने आवेशपूर्ण भाषण में उन्होंने कहा कि गंगा को पूर्ण रूप से संकट मुक्त करने का संकल्प हमें करना है। दस साल से हम लोग गंगा जी पर होते हुए अतिक्रमण के विरोध में लड़ रहे है। अब हमें राष्ट्रीय जल बिरादरी द्वारा जो सहयोग मिला है उससे हमारी शक्ति और बढ़ गई है। गंगा प्रदूषण के खिलाफ पूरे देश का आत्मबल बढ़ने की शक्ति इस कुम्भ ने दी है। फरवरी 2009 में हरिद्वार में कुम्भ का मेला लगने वाला है। उस समय तक गंगा प्रदूषण मुक्त करने का अपना संकल्प पूरा करते है।
3. श्री प्रेमजी बापा पटेल (वृक्षमित्र,गुजरात) ने कहा कि पानी का काम इतना करे कि सरकार को ग्राउण्ड़ वाटर बोर्ड को कुछ काम बचा ही न हो।
4. श्री प्रदीप व्यास (दैनिक भास्कर, मथुरा) ने कहा कि बच्चों के माध्यम से हम जल संरक्षण के विचार आगे ले सकते है । भगवान श्री कृष्ण को जल पुरुष की संज्ञा दी गई है। भारतीय जनमानस में श्री कृष्ण भगवान की व्याप्ती जिस तरह है, उसी तरह ये बच्चे जल संरक्षण के काम सच्ची भावनासे करे ऐसा प्रयास हमें करना है।
5. श्री मोहन कुमार (केरल) ने कहा देश का नवनिर्माण अब जल और जल से सम्बन्धित विषयों पर आधारित है। आप जितना प्यार मिट्टी से करोगे, उससे दुगुना फल वो आपको देगी। राष्ट्रीय जलबिरादरी का कुम्भ का अभियान देश के नव निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम होने वाला है। छोटे किसान ओर असंघटित लोग ही इस लड़ाई में महत्वपूण भूमिका निभाने वाले हैं।
6. केवल सिंह वसावे (शहादा, जिला नदूरबार, महाराष्ट्र) नर्मदा बचाओ आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ता रहे केवल सिंह ने कहा कि प्रकृति के खिलाफ हुए सबसे बड़े बांध के हम प्रत्यक्ष दर्शी रहे है। सरकार ने हमारे सुविधा के लिए कभी सड़क नही बनाई लेकिन हमारे घरों को तोड़ने के लिए सड़क बनानी पड़ी। घर, जंगल उजड़ गये है। अब विंध्य और सातपुड़ा पर्वत में जो छोटी नदियॉ हैं उनको बचाने के लिए और जंगल को हराभरा करने के लिए हमें लड़ना है, आपका साथ आवश्यक है।
7. श्री भगीरथ पुनिया (सहगल फाउण्डेशन गुड़गांव) ने कहा कि शहर के लोग पानी का दुर्उपयोग करते हैं। उनकी विचार धारा और सोच बदलना जरूरी है। जब उनकी सोच नही बदलेगी तब तक गांव का पानी शहर लेते रहेंगे। और लड़ाई न हो इसलिए हमें जागरूक रहना चाहिए।
8. श्री विमल भाई (माटू जन आन्दोलन) ने कहा कि गंगा की जल प्रदूषण और खनन के द्वारा जो हानि हो रही है, जल विद्युत प्रकल्पों की वजह से अविरल बहने वाली गंगा सिकुड़ गई है। देश का यह दुर्भाग्य है कि गंगा के प्रति लोग आस्था रखते हैं लेकिन गंगा को बचाने की लड़ाई में जुड़ते नही। इस कुम्भ में हम बहुत आशा लेकर आये है। गंगा नदी की पवित्रता और अविरलता सदा सम्पन्न रहे, इस लिए हम सब मिलकर प्रयास करें।

9. नेहरु युवा केन्द्र ने कहा कि युवको में पर्यावरण रक्षण की क्षमता है। अच्छे युवक चुनकर उन्हें प्रशिक्षण देने आवश्यकता है। कुम्भ के माध्यम से तैयारी होनी चाहिए। अनुभव के साथ जोश का जजबा बड़ा काम कर सकता है।

कोसी : मानवीय गलतियों से हुआ प्रलय

कुम्भ के विचारों को देश और विदेश से आये कुम्भार्थियों को कोसी के प्रलयंकारी जल प्रपात ने ऑसूओं में धो दिया। जिस प्रकार की स्थिति कोसी नदी के क्षेत्र में रहने वाले गांवों ने गये देढ़ महिने में झेली है, वो पहले और दूसरे विश्व युद्ध के बाद हुई हानी से बदत्तर है। श्री घनश्याम जी, श्री अख्तर हुसैन, श्री दिनेश भाई और श्री पंकज भाई आदि चार कार्यकर्ताओं ने कोसी के दुखदर्द अपने सीने में घोलकर कुम्भ के सामने खड़े हुए उनके दर्द को पूरी सभा ने महसूस किया और बाढ़ के कारण ला पता हुए और जान गवाने वाले लोगों के प्रति संवेदना प्रकट की । श्री अख्तर भाई ने निवेदन किया कि राम मनोहर लोहिया जी ने 1962 में चिन्ता प्रकट की थी कि जल प्रदूषण, अतिक्रमण, और नदी के खिलवाड़ से आने वाले सौ सालों में नदियों की मृत्यू हो सकती है। दुर्भाग्य से ये बात आने वाले सालों में सत्य साबित हुई। नदियॉ अपना स्थान छोड़कर बहने लगी। जो कोसी ने कर दिखाया है वो प्रलय को ही दर्शाता है। अब समय आया है कि सारे लोग नदी संरक्षण में जुड़ जाये।

श्री दिनेश भाई ने कहा कि कोसी नदी के उपर बना तटबंध क्यो टूटा इसका सही जबाब सरकार नही दे रही है। ये अर्दन बांध सरकार के सभी प्रयास के बावजूद ये टूटा लेकिन प्रकृति के सहकार्य ने, बड़े–बड़े वृक्षों की धरातल ने जड़ों ने पानी के आवेग को सीमित रखा अन्यथा तबाही और बड़ी हो सकती थी। सरकार ने इसकी न्यायिक जॉच कराने के लिए आयोग का गठन किया है। हम चाहते है कि निःपक्ष रुप से समाज के माध्यम से ये तटवंध टूटने की जांच हो। राष्टीय जल बिरादरी और कुम्भ की ओर से इसमें अग्रक्रम रखा जाए।

श्री घनश्याम जी ने कहा कि जल जीवन देता है जितनी सच है उतना ही जल जीवन लेता है यह बात भी सच है। ये कोसी के प्रलय ने दिखाया है। बड़े तटवंध का निर्माण बंद करो यह मांग 1980 से लोग कर रहे हैं, लेकिन किसी सरकार ने बात नही सुनी। अब कोसी के प्रलय ने संदश दिया है कि कोसी हाइडैम और कुशवाह के तटबंध नही होंगे। कोसी की त्रासदी को राष्ट्रीय आपदा मानकर काम हो रहा है फिर भी कोसी के क्षेत्र से अभी भी 6 लाख लोगों की जानकारी नही मिल रही है। सेना के अनुसार दो तिहाई लोगों को पानी से बाहर निकाला हैं। अभी भी लोग खेतों में फंसे है। देश में पहली बार बचाव कार्य के लिए तीनों सेना के जवान उतरे । अब लोगों को दबाव बनाकर बाढ़ ग्रस्त लोग और उन्हें बचाने वाले, सहायता करने वाले रिश्तेदारों को भी राहत की सुविधा देने के लिए बाध्य करना हैं। कोसी से निर्माण हुए संकट पर कुम्भ द्वारा सहायता मिलें हमारा मनाबल बढ़े ऐसी प्रार्थना हम करते हैं।

श्री पंकज ने कहा कि बिहार में हुई इस तबाही से सबको सीख मिली है । हमारे जल आन्दोलन को जन आन्दोलन में बदल दे। पानी में आग लगाने की ताकत हम रखते है। यह संदेश भर में जाना चाहिए।

कुम्भ के निमंत्रक एवम् राष्ट्रीय जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह जी ने कुम्भार्थियों को आवाहन किया और सभी उपस्थित पर्यावरण प्रेमियों ने एक साथ मिल कर बिहार से आये साथियों को संपूर्ण रुप से सहकार्य करने का आश्वासन दिया और कोसी से हुए तबाही के कारणों का जांच करने वाले जन आयोंग का गठन करने का सुझाव पारित किया। उसे 'कोसी आपदा जन आयोग' इस नाम से सम्बोधन होगा। इस आयोग में पांच सदस्य रहेंगे। जिसमें सर्वोच्च तथा उच्च न्यायलय के निवृत न्यायाधीश, एक इंजीनियर, एक प्रशासनिक प्रतिनिधि, एक मिडिया प्रतिनिधि और एक प्रतिनिधि जनता से होगा। पूरे भारत के लोग कोसी के बाढ़ से प्रभावित लोगों के साथ है। यह संदेश उन तक जाना आवश्यक है। इसलिए कोसी से

प्रभावित इलाकों में पदयात्रा निकाल कर उनके प्रति संवेदना व्यक्त करके उनको मदद करने का प्रयास किया जायेगा।

कोसी जल बिरादरी के श्री घनश्या मजी एवम् बिहार से आये साथियों सुझाव रखा कि 12 अक्टुबर को यात्रा के बारे में निर्णय लिया जायेगा। और दीपावली के बाद 4 नवम्बर से आगे 20–22 दिन की यात्रा रखी जाए ं इस सुझाव को कुम्भ में उपस्थित सभी पर्यावरण प्रेमियों ने पारीत किया।

ज्येष्ठ कार्यकर्ता एवम् वैज्ञानिक श्री रवि चोपड़ा जी ने इस सुझाव का तुरन्त समर्थन किया। उन्होंने कहा कि जिस जगह पर कोसी का तटबंध टूटा वही से पदयात्रा निकाली जाए। इस कुम्भ में स्थापित आयोग प्रलय के कारणों की पूरी जांच करेंगी।

श्री राजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि यह गलति कोसी की नही तो प्रकृति से खिलवाड़ करने वाले शासन की है। 33 लाख लोग इस बाढ़ से प्रभावित हैं। इनका विचार और उनके मानस को ध्यान में रखकर कदम उठाया जाए। समाज को बरबाद करने के लिए पानी नही है। अब यह लड़ाई समाज की ताकत को साथ लेकर आगे बढ़ाइ जायेगीं। केन्द्र और राज्य सरकार के साथ इस बात पर गम्भीरता से चर्चा होगी । बाढ़ पीड़ितों को सही ढ़ंग से राहत मिले, जिन लोगों ने बाढ़ पीड़ितों की सहायता की है, उन्हें भी मदद मिलने चाहिए। राहत का अनुशासन सही ढ़ंग से हो । इस विषय पर प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी से बात की जायेगी।

तीसरा सत्र

कुम्भ से क्या मिला?

कुम्भ में उपस्थित मान्यवर महानुभवों ने अपना स्पष्ट मत रखा। गायत्री परिवार के श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने कहा कि कुछ अच्छा करने का सामथ्य इस कुम्भ से मिला हैं। दुष्ट प्रकृति के लोग जल्दी संघटित होते हैं क्यों कि वो छोटे स्वार्थों के लिए एक होते है। जन समुह की शक्ति अच्छे विचार और कामनाएं साथ में रखकर अच्छा करने के सामर्थ्य को लेकर आगे बढ़ते गये। इस काम में अगर कम संख्या में लोग हो तो भी चिन्ता करने की जरूरत नही। अच्छी सोच और अच्छे विचारों वाले लोग समाज के हित के लिए एक मंच पर आ सकते हैं, यह राजेन्द्र सिंह जी ने सिद्ध करके दिखाया है।

कुम्भ का लक्ष्य

क्यों करना है हमे कुम्भ?

तरुण भारत सेघ द्वारा जो सामाजिक कार्य गत 22–25 सालों से हो रहा है। उसे समाज ने स्वीकारा है। नदी संरक्षण, जल प्रदूषण ओर समाज को प्रकृति के प्रति आदर और सम्मान बढ़ाने की प्रेरणा देने के लिए तरुण भारत संघ एवम् राष्टीय जल बिरादरी द्वारा देश और दुनिया की सतह पर गांधी जी के विचारों से कुम्भ की संकल्पना रखीं। प्रकृति का विनाश करने वाली रावणीय संस्कृति का नाश करने के लिए समाज की देवी शक्ति मां दुग्र्र की तरह सशक्त होकर प्रकट हो। इस हेतु से कुम्भ का आरम्भ किया है। जिन सन्त समाज ने सात नदियों को पुनर्जीवित किया इस सन्त समाज ने विजया दशमी तक विभिन्न नदियों को पुनर्जीवित करने वाले गांव के लोगों के साथ बैठकर नदी संरखण की अपनी भूमिका और आगे बढ़ा कर समुचित देश की ओर बढ़ाई है। कुम्भ के आयोजन का हक जो नदियों को जीवन देते हैं, उन्हीं को जाता है। अब ये चेतना पूरी देश में फैलना आवश्यक है। गांधी ने प्रकृति के साथ लोगों को जोड़ा किसी एक के लालच को गांधी जी ने कभी कबूल नही किया। लालच में आकर रावण ने सीता के साथ प्रकृति और

नवग्रहों तक सभी का अपहरण किया। यह रावणीय संस्कृति पर्यावरण विनाश के रूप में देशभर पनप रही है। हमे उसे कुम्भ के माध्यम से विरोध करना है। सत्‌शील जन शक्ति का संघठन यह कार्य करने की शक्ति रखता है।

आज कुम्भ के तीसरे दिन कुम्भीय सदस्यों ने जहाजवाली नदी के उद्‌गम स्थान पर जाकर जंगल और जल संरक्षण करने वाले देवरी गांव के लोगों के साथ संवाद किया। इस समय श्री राजेन्द्र सिंह जी ओर सैकड़ों गांव वाले उपस्थित थे।